ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 सितम्बर 2018
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-१०४, वर्ष-१२
भाद्रपद, विक्रमी २०७५ (सितम्बर 2018)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे। युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः॥ –ऋ० १। ३। १८। २

व्याख्यान–(परमेश्वरो हि सर्वजीवेभ्य आशीर्ददाति) ईश्वर सब जीवों को आशीर्वाद देता है कि–हे जीवो! (वः) (युष्माकम्) तुम्हारे आयुध अर्थात् शतघ्नी (तोप), भुशुण्डी (बन्दूक), धनुषबाण, असि (तलवार), शक्ति (बरछी) आदि शस्त्र स्थिर और "वीळू" दृढ़ हों। किस प्रयोजन के लिए ? (पराणुदे) तुम्हारे शुत्रओं के पराजय के लिए। जिससे तुम्हारे कोई दुष्ट शत्रु लोग कभी दुःख न दे सकें। (उत प्रतिष्कभे) [और] शत्रुओं के वेग को थामने के लिए (युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी] तुम्हारी बलरूप उत्तम सेना सब संसार में प्रशंसित हो। जिससे तुमसे लड़ने को शत्रु का कोई संकल्प भी न हो। परन्तु (मा मर्त्यस्य मायिनः) जो अन्यायकारी मनुष्य है, उसको हम आशीर्वाद नहीं देते। दुष्ट, पापी, ईश्वरभक्तिरहित मनुष्य का बल और राज्यैश्वर्यादि कभी मत बढ़ो। उसका पराजय ही सदा हो। हे बन्धुवर्गो! आओ अपने सब मिलके सर्व दुःखों का विनाश और विजय के लिए ईश्वर को प्रसन्न करें, जो अपने को वह ईश्वर आशीर्वाद देवे। जिससे अपने शत्रु कभी न बढ़ें।।

सम्पादकीय

जीवन से वैर, मृत्यु पर प्रेम..?

श्री अटल बिहारी वाजपेई जी की 16 अगस्त 2018 को मृत्यु हो गयी, वे अपनी आयु के 93 वर्ष पूरे कर चुके थे, वे विद्यार्थी जीवन में **'आर्य कुमार सभा'** में रह चुके थे, पुनरपि दुर्भाग्य ही कहना होगा कि एक आर्य कुमार, आर्य युवा न बन सका और आर्य रहते हुए वृद्ध न हो पाया, जैसा कि–उन्होंने एक सभा में कहा था कि– न जाने कब मेरा नाम आर्यसमाज से काट दिया गया? वास्तव में श्री वाजपेई जी ने सघर्ष तो किया है आर्य भाषा (हिन्दी) की अच्छी जानकारी और उसका यथावत् उपयोग करने में वे दक्ष थे, फलस्वरूप विरोधी भी मौन हो जाते थे। किन्तु आर्यत्व के गुणों से इतने दूर कैसे चले गये कि मांसाहारादि को अपने प्रिय भोजन में ही सूचीबद्ध कर बैठे, यह बड़ा विक्षोभ उत्पन्न करता है। तथापि सम्प्रति मेरा विषय इस बार व्यक्ति के माध्यम से एक सैद्धान्तिक चर्चा करना है, जोकि हमारे देश की एक परिपाटी बन चुकी है, जो श्री वाजपेई जी के जीवनकाल में हमने देखी है और अब मृत्यु पर भी देखी है।

परिपाटी यह बन चुकी है कि– जीवित बाप से दंगम दंगा और मरे बाप पहुँचाए गंगा। हममें से बहुत लोगों ने वह समय देखा है जब 17 अप्रैल 1999 को इन्हीं वाजपेई जी की अच्छी भली चलती हुई सरकार को कांग्रेस ने अनैतिक वोट के रूप में ओडिसा के तत्कालिक मुख्यमंत्री श्री गिरधर गोमांग के वोट से गिरा दिया गया था। जबकि मृत्यु के उपरात्न वही कांग्रेस के नेता श्री वाजपेई के पार्थिव शरीर पर पुष्प चक्र चढ़ाने पहुँच गये। **सामान्य जन कहेंगे यही तो राजनीति है, तो फिर देशहित क्या है? राष्ट्र की उन्नति कैसे सम्भव है?** क्या स्वार्थ ही सब कुछ है, अहंकार की पूर्ति से ही देश का भान होता है, मृत्यु के उपरान्त शव की पूजा करने से यदि देश–समाज का हित होता है तो अब तक गांधी जी, नेहरू जी, पटेल जी, इन्दिरा जी की ही नहीं अपितु हमारे आर्य पूर्वज श्रीराम एवं श्रीकृष्ण जी जैसे महापुरुषों की अखण्ड पूजा ने देश–समाज को स्वर्गोपम बना दिया होता। अब यदि यथार्थ विवेकपूर्वक चिन्तन करते हुए विचारें तो मृत्यु के उपरान्त पुष्पचक्र चढ़ाने की अपेक्षा सवा सौ करोड़ देशवासियों के हितचिन्तन में यदि 1999 में एक वोट दे दिया गया होता तो देश उस समय एक देशव्यापी चुनाव से बच जाता, देश का अरबों रुपया बचता, विश्व में देश का सम्मान बचता, हमारी प्रतिष्ठा बचती। पुनः निवर्चन होने पर वही वाजपेई सरकार पुनःसत्ता में आयी और साढ़े चार वर्ष तक चली।

मृत्यु उपरान्त लोग कहते हैं– श्री वाजपेई युगपुरुष थे, महान पुरुष थे, वह हिन्दु, मुस्लिम, सिख, इसाई सभी के नेता थे, प्रिय थे, सबसे लोकप्रिय

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

नेता थे, जबकि सत्य यह है कि उन्होंने जितनी बार भी सरकार चलाई वह चौबीस दलों, बाईस दलों के सहयोग से चलाई, यदि इतने अच्छे व्यक्ति थे तो देश की जनता तब कहाँ सोने चली गई? जब 2004 ई० के लोकसभा चुनाव में उनकी पार्टी चुनाव हार गई और दश वर्ष उनकी सरकार से बहुत ही निकम्मी सरकार चलती रही।

तात्पर्य यह है कि जीवित व्यक्ति से वैर और मृत व्यक्ति से प्रेम की इस परिपाटी से हम कब मुक्त होंगे? कब हम जीवित रहते माता-पिता, वृद्धजनों का, नेताओं का, वैज्ञानिकों, विचारकों का महत्व समझ पायेंगे? कब?

अभी 3 सितम्बर को इस वर्ष भगवान उपाधि से विभूषित श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव सम्पूर्ण देश में मनाया गया है, जब तक श्री कृष्ण का जीवन रहा, तब तक लोगों ने उन्हें सुख की श्वांस भी न लेने दी? बाल्यकाल में मामा कंस, यौवन में जरासन्ध, शिशुपाल, तो उत्तरार्ध में दुर्योधन रूपी राक्षस के आंतक ने देश में त्राहि-त्राहि मचा के रखी। कुछ वृद्धाप्य में सुख मिलता तो अपने कुल में कलंकी लोगों ने कुल का ही विनाश कर डाला, किन्तु फिर भी वे योगारूढ़ रहे, स्थितप्रज्ञ रहे। किन्तु मृत्यु के उपरान्त पाँच सहस्राधिक वर्ष व्यतीत होने पर भी गली-गली, घर-घर में पूजन, वह भी सम्पूर्ण विकृत मानसिकता के साथ? आखिर यह कैसी परम्पराएं हैं? कैसा उत्वस है? सत्य से सर्वथा शून्य, इतना विकृत भला इस सम्पूर्ण विश्व में किसी ने अपने पूज्यों को और भी कहीं किया होगा?

आर्य! आर्योओ! ऋषि-मुनियों के वंशजों! तनिक विचार कीजिए! परिपाटी को बदलिए। गुणों के आधार पर व्यक्तियों का मूल्याकंन कीजिए! विद्या के आधार पर, पुरुषार्थ के आधार पर विचार कीजिए! कहीं ऐसा न हो कि जिस व्यक्ति को आप वर्त्तमान में तिरोहित कर रहे हों, अपमानित कर रहे हों, अपशब्दों की वर्षा कर रहे हों, अपना सबसे बड़ा शत्रु मान रहे हों, उसी व्यक्ति को भविष्य में मृत्यु के उपरान्त आपकी संतानें महापुरुष, युगपुरुष, भगवान आदि मानने लग जावें और मंदिर बनाकर पूजने में तत्पर हो जावें। इससे अच्छा वर्त्तमान को पहिचानिए! जीवित रहते अपने लोगों का पालन-पोषण, सम्मान-पूजन कीजिए! मरने के उपरान्त तो **"भस्मान्तम शरीरम्"** तब चाहे कुछ भी कर लिजिएगा प्रायाचित न हो पायेगा। जो लुट-पिट गया, नष्ट हो गया वह वापस न हो पायेगा। इसलिए आईए! वर्त्तमान में जीवन को सुखद, सुनियोजित, सुव्यवस्थित, अनुशासित और संगठित बनाइए! वर्त्तमान को पूजिए!

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **"अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।"**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय प्रारंभ करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

नाप्राप्यमभिवाञ्छन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।
आपत्सु च न मुह्यन्ति नराः पण्डितबुद्धयः ॥४॥

[महा० उद्यो० विदुरप्रजागर अ० ३३ । श्लोक २३]

जो मनुष्य प्राप्ति होने के आयोग्य पदार्थों की कभी इच्छा नहीं करते, अदृष्ट वा किसी पदार्थ के नष्ट-भ्रष्ट हो जाने पर शोक करने की अभिलाषा नहीं करते, और बड़े-बड़े दुःखों से युक्त व्यवहारों की प्राप्ति में भी मूढ़ होकर नहीं घबराते हैं, वे मनुष्य **'पण्डितों'** की बुद्धि से युक्त कहाते हैं।।४।।

प्रवृत्तवाक् चित्रकथ ऊहवान् प्रतिभानवान् ।
आशु ग्रन्थस्य वक्ता च यः स पण्डित उच्यते ॥ ५॥

[महा० उद्यो० विदुरप्रजागर अ० ३३ । श्लोक २८]

जिसकी वाणी सब विद्याओं में चलनेवाली, अत्यन्त अद्भुत विद्याओं की कथाओं को करने, बिना जाने पदार्थों को तर्क से शीघ्र जानने-जनाने, सुनी-विचारी विद्याओं को सदा उपस्थित रखने और जो सब विद्याओं के ग्रन्थों को अन्य मनुष्यों को शीघ्र पढ़ानेवाला मनुष्य है, वही **'पण्डित'** कहाता है ।। ५।।

श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा चैव श्रुतानुगा ।
असंभिन्नार्यमर्यादः पण्डिताख्यां लभेत सः॥ ६॥

[महा० उद्यो० विदुरप्रजागर अ० ३३ । श्लोक २९]

जिसकी सुनी हुई और पठित विद्या अपनी बुद्धि के सदा अनुकूल, और बुद्धि और क्रिया सुनी-पढ़ी हुई विद्याओं के अनुसार, जो धार्मिक, श्रेष्ठ पुरुषों की मर्यादा का रक्षक और दुष्ट-डाकुओं की रीति को विदीर्ण करनेहारा मनुष्य है, वही **'पण्डित'** नाम धराने के योग्य होता है ।।६।।

जहाँ ऐसे-ऐसे सत्पुरुष पढ़ाने और बुद्धिमान् पढ़ानेवाले होते हैं वहाँ विद्या और धर्म की वृद्धि होकर सदा आनन्द ही बढ़ता जाता है। और जहाँ निम्नलिखित मूढ़ पढ़ने-पढ़ानेहारे होते हैं, वहाँ अविद्या और अधर्म की उन्नति होकर दुःख ही बढ़ता जाता है।

आर्य शिक्षक व आर्य निर्माण

–आचार्य सतीश

किसी आन्दोलन, क्रान्ति या विचारधारा को व्यापकता प्रदान करने का कार्य जितने प्रभाव के साथ, सहजता और तत्परता से शिक्षक कर सकता है उतना समाज का अन्य कोई वर्ग नहीं कर सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि संसार में जितनी भी क्रान्तियां हुई उन सबकी सफलता के पीछे उसके इस वर्ग का हाथ रहा है जो छात्रों को शिक्षा देने का कार्य करता है। वह शिक्षक जो अकेला ही सैकड़ों छात्रों को बड़ी ही सहजता से उन विचारों से ओत-प्रोत कर सकता है और शिक्षक यदि विशेष प्रयास करे तो पूरे समाज को आन्दोलित कर सकता है। शिक्षक को दो आयाम इतना विशेष बना देते हैं कि वह समाज का एक विशेष वर्ग बन जाता है। एक तो- वह चिन्तन-मनन-विचार का आधार होता है और दूसरा- वह जो विचार समाज को देना चाहता है छात्र रूप में वाहक उसके पास होते हैं।

अगर हम इतिहास पर दृष्टि डालें तो प्राचीनकाल के शिक्षकरूपी ऋषि-मुनियों ने समाज का मार्गदर्शन किया है, चाणक्य जैसे शिक्षक को पाते हैं जो पूरे राष्ट्र को एक करने का संघर्ष करते हैं और कई सौ वर्षों तक राष्ट्र में सुख, शान्ति स्थापित कर ले जाते हैं। इसके अलावा पिछली कुछ शताब्दियों में संसार भर में जितनी भी क्रान्तियां हुई हैं उन सब में शिक्षकों का महत्ववूर्ण योगदान रहा है।

विचार ही किसी आन्दोलन को जन्म देता है और विचारों को व्यापक करने में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। वह अपने छात्रों के माध्यम से उसे समाज के हर घर तक पहुँचा सकता है। समाज के हर वर्ग का छात्र उसके सम्पर्क में होता है। यह कार्य प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाले शिक्षकों से लेकर विश्वविद्यालयों के शिक्षकों तक एक समान रूप से कर सकते हैं। शिक्षकों के द्वारा अपने छात्रों को दिये गए विचार उसके मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं क्योंकि छात्र के विचार उस समय तक परिपक्व नहीं होते हैं और निर्माण की प्रक्रिया में होते हैं। यदि शिक्षक चाहे तो समाज के वरिष्ठ वर्ग को भी प्रेरित कर सकता है। समाज में आज भी केसी न किसी रूप में शिक्षक का संम्पर्क निरन्तर रहता ही है।

शिक्षक का कर्तव्य भी है कि वह समाज में उस श्रेष्ठ विचारधारा को प्रतिपादित करे जो मनुष्य की उन्नति के लिए हो। समाज व राष्ट्र की परिस्थितियों को समझकर उसे एक नई दिशा देने का कार्य करना ही उसका उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षक का कार्य मात्र जीविका प्राप्त करने का नहीं और न मात्र अक्षर ज्ञान देने का है, अपितु शिक्षक का कार्य समाज को एक नई दिशा देने का है। उसका कार्य निरन्तर है। स्थितियों का विश्लेषण कर राष्ट्र के उत्थान हेतु छात्रों को तैयार करना है। समाज व राष्ट्र को दिशा देना है। वह मार्गदर्शक है और यदि वह मार्गदर्शक का कार्य नहीं करता है तो उसी के छात्र अयोग्य व्यक्तियों से मार्गदर्शन प्रात करेंगे और समाज व राष्ट्र के लिए विध्वंसक बनेंगे और बन भी रहे हैं। अत: उसे निरन्तर सजग रहते हुए अपने शिक्षण कार्य को करना होता है और जिस समाज व राष्ट्र में शिक्षक ने अपनी भूमिका का ठीक से निर्वहन नहीं किया उसी समाज व राष्ट्र का पतन हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्तव्य का बोध कराने का कार्य तो शिक्षक का ही है और यदि वही अपने कर्तव्य से विमुख हो जाता है तो कौन संम्भाले?

वर्त्तमान में आर्य निर्माण का जो महत्वपूर्ण कार्य समाज व राष्ट्र के निर्माण के लिए अनवरत चल रहा है उसको भी व्यापक करने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है और अनेक शिक्षक इसके लिए प्रयास भी कर रहे हैं। लेकिन अभी भी शिक्षकों द्वारा जितना इस आन्दोलन को तेज करने का प्रयास होना चाहिए उतना नहीं हुआ है। अब यह उन सभी का कर्तव्य बनता है जो आर्य विद्या लेकर आर्य बन चुके है अर्थात् आर्य शिक्षकों का। आर्य शिक्षक इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। वास्तव में आर्य निर्माण का कार्य भी एक शिक्षा देने का ही कार्य है।

मेरा सभी आर्य शिक्षकों से यह आह्वान है कि आगे बढ़ें, संगठित हों और आर्य विचारों को जन-जन में पहुँचाने का कार्य करें। अपने छात्रों के माध्यम से व साथी शिक्षकों के माध्यम से। जो शिक्षक आर्य विद्या ले चुके हैं वे यह सुनिश्चित करें कि उनका एक भी छात्र इस विद्या से अपरिचित न रहे। वह अपने हर छात्र को विवेकशील बना दें, इतनी समझ तो पैदा कर ही दें कि वह अध्यात्म व धर्म के नाम पर हो रहे शोषण से बच सकें और आर्य सिद्धान्तों के विरुद्ध तो न चलें, जिससे बड़ा होने पर उसे पूर्ण रूप से आर्य बनाने में सरलता रहे। प्रत्येक आर्य शिक्षक यह सुनिश्चित करे कि उसका प्रत्येक शिक्षक साथी, समाज में उसके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आर्य विचारों व वेद के महत्व को समझ जाए। आर्य शिक्षक इस दिशा में बढ़ें और इसे अपना उद्देश्य बनाएं तो हम एक साथ ही लाखों छात्रों व उनके परिवारों तक इन विचारों को पहुँचा सकते हैं। पूरा समाज व राष्ट्र शिक्षकों का मार्गदर्शन चाहता है और जैसा मार्गदर्शन एक आर्य शिक्षक दे सकता है अन्य नहीं। अत: आओ, अधिक से अधिक शिक्षकों को आर्य बनाएं, छात्रों को आर्य विचारों से परिचित कराएं, समाज में प्रत्येक व्यक्ति को वेद का महत्व जनाएं और आर्य निर्माण अर्थात् वेद प्रतिस्थापन के कार्य को जन-जन तक पहुँचाएं। यह भी हमारा सौभाग्य है कि इस कार्य में सहयोग करने को राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा भी पूर्णतया तैयार है, छात्रों के लिए पाठ्यक्रम तैयार है। अत: सभी मिलकर राष्ट्र को एक दिशा प्रदान करें और अपने पूर्वजों, ऋषियों के ऋण से कुछ तो मुक्त हों।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	9 सितम्बर	दिन-रविवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-मघा
पूर्णिमा	25 सितम्बर	दिन-मंगलवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-उ०भाद्रपदा
अमावस्या	9 अक्टूबर	दिन-मंगलवार	मास-आश्विन	ऋतु-शरद	नक्षत्र-हस्त
पूर्णिमा	24 अक्टूबर	दिन-बुधवार	मास-आश्विन	ऋतु-शरद	नक्षत्र-रेवती

आर्य महासंघ की स्थापना

-आचार्य अशोक पाल (राष्ट्रीय महासचिव,
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा)

युवाओ! आर्यो! आर्याओ!

जैसा कि हम सबको विदित है कि आर्यों में एकता, विश्वास, सामन्जस्य, भ्रातृत्व के उत्थान हेतु श्रद्धेय आचार्य हनुमत्प्रसाद अथर्वेदाचार्य जी ने कृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर **'आर्य महासंघ'** की स्थापना की घोषणा की। तकनीक के प्रयोग ने इस नाम को लगभग प्रत्येक आर्य-आर्या के कानों तक पहुँचाने ने बहुत सहयोग किया। यह शुभ समाचार विद्युत तरगों के समान द्रुत गति से प्रचारित-प्रसारित हुआ। आर्य एकता अभियान के आधारभूत संगठन का नाम जन-जन तक पहुँचाने के लिए आप सब धन्यवाद के पात्र हैं। नाम के साथ संगठन के कार्यों, उद्देश्यों, विधियों पर विचार करना अनिवार्य है और आर्य जगत जिज्ञासा भरी दृष्टि से **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** पत्रिका की प्रतिक्षा कर रहा है- ऐसा विचार कर मैंने यह लेख लिखने का निर्णय किया।

युवाओं! वैसे तो आचार्य हनुमतप्रसाद अथर्वेदाचार्य जी ने अधिकारिक विज्ञप्ति भी जारी की है, जो आपने अवश्य पढ़ी होगी। फिर भी थोड़ा विचार विज्ञप्ति पर भी करें।

आचार्य जी ने प्रारम्भ में आर्यसमाज की वर्त्तमान दुर्दशा का उल्लेख किया है- जहाँ वे आर्यसमाज को षडयन्त्रों के शिकार के रूप में देखते हैं जो कि सही भी है, अन्यथा स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला संगठन स्वतन्त्रता के बाद अपनी अन्तिम श्वास-घड़ियाँ क्यों गिन रहा है? ऋषि दयानन्द ने जिन्हें आर्यसमाज की रक्षा का भार सौंपा था वही इसे नोंच-नोंच कर क्यों खा रहे हैं? मैं समझ सकता हूँ आर्यसमाज की इस दुर्दशा को देखकर एक सत्यनिष्ठ आर्य पर क्या गुजरती है?

चारों ओर घटाघोप तिमिर देखकर भी आचार्य जी ऋषि परम्परा का अबलंबन करते दिखाई पड़ते हैं और लगातार पिछले 15 वर्षों से सतत् आर्य निर्माण अभियान में घर-घर, गली-गली तक पहुँच बनाई है। दो लाख से अधिक युवाओं तक आर्य सिद्धान्तों की पहुँच सुनिश्चित करना, उन्हें गौरवान्वित आर्य बनाना एक भागीरथ प्रयास ही कहा जायेगा, जिससे प्रतिनिधि सभायें, सार्वदेशिक सभायें घबराती हैं, नाक सिकोड़ती हैं अथवा स्वार्थ के मकड़ जाल में फंसी अपनी-अपनी डफली बजाती दिखाई देती हैं। उनके व्यवस्थिकरण हेतु भी आचार्य जी सतत् संघर्ष करते ही रहे हैं एवं भविष्य में भी आर्यहित हेतु संकल्पित हैं।

इसी संकल्प के साथ 03 सितम्बर 2018 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी दिवस पर आचार्य जी ने सैकड़ों युवाओं से खचा-खच भरे हाल में विद्वानों, मनीषियों के सानिध्य में आर्य महासंघ के गठन की घोषणा की एवं विश्वभर के ऋषि परम्परा के अनुयायियों को आर्य महासंघ में सम्मिलित होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि एक साथ मिलकर **संगच्छध्व....** की वेदाज्ञा का पालन कर हम आर्य एकता की नींव डालें क्योंकि ऋषि दयानन्द भी आर्यों में फूट के राज रोग को दग्धबीज करना चाहते थे। यह आर्य एकता ही इहलोक एवं परलोक के सुख का आधार है एवं भविष्य में विश्व बन्धुत्व की शुरुआत।

आचार्य जी के एकता के इस आह्वान को आर्यों, आर्याओं, आर्य सभाओं, संस्थाओं ने हाथों-हाथ लिया। सर्वप्रथम आर्य महासंघ में सम्मिलित होने की घोषणा राष्ट्रीय आर्य निमात्री सभा के अध्यक्ष आचार्य जितेन्द्र जी ने की। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा अपने आचार्यों, उपदेशकों, प्रवक्ताओं, दो लाख से अधिक आर्य निर्माताओं, कार्यकर्ताओं, आर्य समाजों, गुरुकुलों सहित आर्य महासंघ की सर्वोच्चता स्वीकार करती है। आज से आर्य महासंघ का प्रत्येक निर्णय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा सहर्ष स्वीकार करेगी एवं आर्य बन्धुत्व के इस वृहद् अभियान में प्राणपन से पूर्ण पुरुषार्थ करेगी।

तत्पचात् राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष पहलवान वीरेन्द्र आर्य ने अपने संगठन के आर्य महासंघ में विलय की घोषणा करते हुए कहा कि वे आर्य महासंघ की सुरक्षा का उत्तरदायित्व ग्रहण करने को उद्यत हैं। जैसे श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि आर्य क्षत्रियों ने आर्यों के हितार्थ अपना सर्वस्व आहुत किया, ठीक वैसे ही प्रत्येक आर्य क्षत्रिय आर्य महासंघ के विद्वानों, अधिकारियों, सदस्यों की सुरक्षा लेता है।

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा, राष्ट्रीय आर्य संरक्षणी सभा, राष्ट्रीय आर्य राजसभा एवं उपस्थित सैकड़ों आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भी तुरन्त प्रभाव से आर्य महासंघ का अधिपत्य सहर्ष स्वीकार किया। इस भाई-चारे से परिपूर्ण पल का साक्षी बनकर मैं स्वयं गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ। **आर्य महासंघ के संस्थापक आचार्य हनुमत्प्रसाद को ही आर्य विद्या सभा ने आर्य महासंघ का अध्यक्ष नियुक्त किया।**

आप सब युवायों, आर्यों, आर्याओं को मैं आह्वान करता हूँ कि आर्य एकता के पवित्र एवं और आवश्यक कार्य को गति देवें। मन की सभी शंकाओं को दग्धबीज कर कल्याण के लिए आर्य महासंघ की शरण में चलें।

आर्य महासंघ ही सभी सुखों का मूल है। एकता होने पर ही सुख की, आनन्द की वर्षा होती है। आईये ईश्वरीय आज्ञा का पालन करें, चलें संग-संग, सुदृढ़ करें आर्य आर्य महासंघ। अब तक विभिन्न प्रान्तों से सैकड़ों आर्यसमाजें व अन्य आर्य संस्थाएं महासंघ में सम्मिलित होने को तत्पर हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि प्रभु! हमारे मन में एक्य का अनुकरण प्रस्फुटित करें कि हम हठ, दुराग्रह, स्वार्थ का नाश कर, ऋषि आकांक्षा को पूर्ण कर सकें और विश्व में पुनः आर्यों का एकछत्र राज्य स्थापित हो सके।

संध्या काल

भाद्रपद- मास, शरद ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(27 अगस्त 2018 से 25 सितम्बर 2018)
प्रातः कालः 6 बजकर 00 मिनट से **(6.00 A.M.)**
सांय कालः 6 बजकर 30 मिनट से **(6.30 P.M.)**

आश्विन मास, शरद ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(26 सितम्बर 2019 से 24 अक्टूबर 2019)
प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से **(6.15 A.M.)**
सांय कालः 6 बजकर 45 मिनट से **(6.45 P.M.)**

आर्य विद्या ही एकमात्र समाधान

संसार भर में फैले मत-मतान्तरों में आज तक इसी भ्रांति का निराकरण नहीं हो पाया है कि ईश्वर कैसा है? इस प्रश्न पर स्वभाविक रूप से मनुष्य के मन में कई विचार आ सकते हैं।

प्रथम विचार करें तो हमें मनुष्य की शक्तियों पर विचार करना पड़ता है कि मैं मनुष्य हूँ। मेरी शक्तियां सीमित हैं। बुद्धि-मन आदि सब जड़ है। मैं सर्वशक्तिमान नहीं हूँ। मैं हर काम नहीं कर सकता हूँ। ऐसे बहुत से काम हैं जो मुझे दूसरों की सहायता लेकर करने पड़ते हैं। जैसे हम घर में बिजली का प्रयोग करते हैं, घर में बिजली का कनेक्शन है। किसी स्थान से सरकारी विभाग के कर्मचारियों द्वारा बिजली पोल टू पोल पावर हाऊस तक लाई जाती है, वहाँ से वितरण की जाती है। विचार कीजिए यदि यह व्यवस्था ना हो तो जीवन में समस्याएं आ सकती हैं अर्थात् ऐसे अनेक कार्य हैं जो हम दूसरों की सहायता के बिना नहीं कर सकते। हम अपनी आंखों से सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी व पृथ्वी के भिन्न-भिन्न स्थानों व पदार्थों को देखते हैं, ये सब कुछ किसी मनुष्य समूह द्वारा नहीं बनाये गए हैं। कोई भी मनुष्य अकेला या संगठित होकर इन पदार्थों का निमार्ण नहीं कर सकता। इस उदाहरण से मनुष्य से भिन्न एक अन्य सत्ता के अस्तित्व का बोध होता है। यह सब मनुष्य या मनुष्यों के समूह द्वारा नहीं बनाया गया है। यह एक सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक सत्ता की कृति या रचना है। यही उत्तर चन्द्र, पृथ्वी, तारे, समुन्द्र, पर्वत, मनुष्य व अन्य प्राणियों पर भी लागू होता है। अर्थात् यह सभी पदार्थ मनुष्य ने नहीं मनुष्य से भिन्न सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, अनादि, अन्नत, नित्य, चेतन सत्ता के द्वारा बनाये गए हैं। उसी सत्ता को ईश्वर कहते हैं।

अगर आधुनिक विज्ञान की मानें तो बिग-बैंग थ्योरी के आधार पर सभी सूर्यादि ग्रहों की उत्पत्ति हुई। लेकिन यहाँ यह प्रश्न उठता है कि सभी ग्रह नियम में हैं तो नियंता को कैसे नकारा जा सकता है? संसार का होना और इसका व्यवस्थित रूप से काम करना इसके निर्माता का ज्ञान करा रहा है, ईश्वर का होना स्वयं सिद्ध एवं प्रत्यक्ष है। सिद्धान्त है कि रचना विशेष को देखकर रचयिता का ज्ञान हो जाता है। आज भी विज्ञान और नास्तिकों के पास इस सृष्टि रचियता का यर्थात् ज्ञान नहीं है। वेद, दर्शन, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों के अध्ययन से ईश्वर का निभ्रान्त ज्ञान होता है।

अत: बुद्धि व तर्क के आधार पर ईश्वर का होना, उसे मानना, आदर व सम्मान देना मनुष्य, विद्वानों का कर्तव्य निश्चित होता है। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के दो दिवसीय लघु गुरुकुल (सत्र) में बैठने से पूर्व युवकों के भिन्न-भिन्न मत होते हैं, कोई ईश्वर को मानता है तो कोई नहीं। लेकिन सत्र के उरान्त सभी का विचार एक हो जाता है और उस सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, निराकार को ही ईश्वर मानते हैं। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के अतिरिक्त बहुत से भिन्न-भिन्न मतों के कार्यकर्ता अपना-अपना प्रचार-प्रसार करते रहते हैं। चाहे वो मुसलमान हो या ईसाई हो या आर.एस.एस वाले हों। सब अपने संगठन को मजबूत करने के लिए दिन-रात लगे हैं। ब्रेन वॉश करके, प्रलोभन देकर चाहे कैसे भी अपने में मिलाने का भरसक प्रयास करते हैं। कुछ दिन पहले चंडीगढ बस स्टैण्ड पर बस की प्रतीक्षा कर रहा था तभी वहाँ 2 युवक और 2 युवती आये। अनकी आयु 20 से 25 वर्ष के बीच होगी। युवक ने हाथ मिलाते हुए बोला कैसे हो भाई? मैंने प्रश्न किया क्या मैं आपको जानता हूँ? उसने कहा नहीं! अपना परिचय देते हुए कहा हम एक संस्था के लिए कार्य करते हैं जिससे हम बीमार, रोगी आदि लोगों के ठीक होने के लिए प्रार्थना करते है..। मैंने कहा किससे करते हैं आप प्रार्थना? उत्तर मिला यीशु मसीह से। मैंने तुरन्त चार-पांच प्रश्न किये जिसमें वो उलझ गए। यदि मेरे स्थान पर कोई और युवक होता जिसको वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी न हो तो वे उनसे प्रभावित हो उन के साथ हो लेते। इस घटना को यहां बताने का उद्देश्य यह है कि जमीनी स्तर पर बहुत से मतों के कार्यकर्ता सक्रिय हैं जो प्रतिदिन युवक-युवतियों से मिलकर उन्हें अपने मत में मिला ले जाते हैं। इसलिए अब हमारे हिन्दु भाईयों को सम्भालना है तो एकमात्र विकल्प आर्यकरण ही बचता है। जो प्रतिसप्ताह आर्य निर्मात्री सभा के तत्वावधान में हो रहा है। समय रहते हम अपने भाईयों-बहनों, घर-परिवार, सगे संबन्धियों को आर्य प्रशिक्षण सत्र में भेजें। इसी में हमारा हित है और इसी में राष्ट्र का हित है।

-कुलदीप आर्य, गांव नगूरा, जीन्द, हरियाणा।

मेरे वैदिक शिक्षक -आर्य दीपक विद्यार्थी

सारे विश्व का मान बढ़ाते मेरे वैदिक शिक्षक,
वैदिक काल का ज्ञान कराते मेरे वैदिक शिक्षक,
वेदज्ञान से परीचित कराते मेरे वैदिक शिक्षक,
धर्म-अधर्म का पाठ पढ़ाते मेरे वैदिक शिक्षक,
अंधविश्वास को दूर कराते मेरे वैदिक शिक्षक,
डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक सब ही बनाते,
लेकिन हमें मनुष्य बनाते मेरे वैदिक शिक्षक।
मार्गदर्शक बनकर एक्य कराते मेरे वैदिक शिक्षक,
वेदज्ञान दे मानवता सिखलाते मेरे वैदिक शिक्षक,
खुद जलकर हमें रौशनी देते मेरे वैदिक शिक्षक,
राष्ट्र-समाज की बात बताते मेरे वैदिक शिक्षक,
न खायें ठोकर यह सिखलाते मेरे वैदिक शिक्षक,
बलिदान की राह दिखलाते मेरे वैदिक शिक्षक,
अविद्या छुड़ा विद्या दे जाते मेरे वैदिक शिक्षक,
सही-गलत की पहचान बताते मेरे वैदिक शिक्षक,
ऋषि अनुकूलन परिभाषा पढ़ाते मेरे वैदिक शिक्षक,
जन-जन में वेद ज्ञान फैलाते मेरे वैदिक शिक्षक,
सर्वसमाज को आर्य समाज बनाते मेरे वैदिक शिक्षक,
ऋषि आकांक्षा हमें बतलाते मेरे वैदिक शिक्षक,
राष्ट्रभक्ति का बोध कराते मेरे वैदिक शिक्षक,
आत्मविश्वास का दीप जलाते मेरे वैदिक शिक्षक,
नमन करें हम सभी उनके पुरुषार्थ को,
रहें राह दिखाते इसी प्रकार से मेरे वैदिक शिक्षक।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/पत्रिका

पर जाएं।

27 अगस्त-25 सितम्बर 2018 **भाद्रपद** ऋतु- शरद

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती	अश्विनी	भरणी	स्वतिका
कृष्ण प्रतिपदा	कृष्ण द्वितीया	कृष्ण तृतीया	कृष्ण चतुर्थी	कृष्ण पंचमी	कृष्ण षष्ठी	कृष्ण सप्तमी
27 अगस्त	28 अगस्त	29 अगस्त	30 अगस्त	31 अगस्त	1 सितम्बर	2 सितम्बर
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
कृष्ण अष्टमी	कृष्ण नवमी	कृष्ण दशमी	कृष्ण एकादशी	कृष्ण द्वादशी/त्रयोदशी	कृष्ण चतुर्दशी	कृष्ण अमावस्या
3 सितम्बर	4 सितम्बर	5 सितम्बर	6 सितम्बर	7 सितम्बर	8 सितम्बर	9 सितम्बर
उ॰ फाल्गुनी	हस्त	चित्र	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
शुक्ल प्रतिपदा	शुक्ल द्वितीया	शुक्ल तृतीया	शुक्ल चतुर्थी	शुक्ल पंचमी	शुक्ल षष्ठी	शुक्ल सप्तमी
10 सितम्बर	11 सितम्बर	12 सितम्बर	13 सितम्बर	14 सितम्बर	15 सितम्बर	16 सितम्बर
मूल	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
शुक्ल अष्टमी	शुक्ल नवमी	शुक्ल दशमी	शुक्ल एकादशी	शुक्ल द्वादशी	शुक्ल त्रयोदशी	शुक्ल चतुर्दशी
17 सितम्बर	18 सितम्बर	19 सितम्बर	20 सितम्बर	21 सितम्बर	22 सितम्बर	23 सितम्बर
पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा				श्री कृष्णचन्द्र जयन्ती भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (03 सितम्बर)	
शुक्ल चतुर्दशी	शुक्ल पूर्णिमा					
24 सितम्बर	25 सितम्बर					

26 सितम्बर-24 अक्टूबर 2018 **आश्विन** ऋतु- शरद

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
		कृष्ण प्रतिपदा	कृष्ण द्वितीया	कृष्ण तृतीया	कृष्ण चतुर्थी	कृष्ण पंचमी/षष्ठी
		26 सितम्बर	27 सितम्बर	28 सितम्बर	29 सितम्बर	30 सितम्बर
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू॰ फाल्गुनी
कृष्ण सप्तमी	कृष्ण अष्टमी	कृष्ण नवमी	कृष्ण दशमी	कृष्ण एकादशी	कृष्ण द्वादशी	कृष्ण त्रयोदशी
1 अक्टूबर	2 अक्टूबर	3 अक्टूबर	4 अक्टूबर	5 अक्टूबर	6 अक्टूबर	7 अक्टूबर
उ॰ फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
कृष्ण चतुर्दशी	कृष्ण अमावस्या	शुक्ल प्रतिपदा/द्वितीया	शुक्ल तृतीया	शुक्ल चतुर्थी	शुक्ल पंचमी	शुक्ल पंचमी
8 अक्टूबर	9 अक्टूबर	10 अक्टूबर	11 अक्टूबर	12 अक्टूबर	13 अक्टूबर	14 अक्टूबर
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा
शुक्ल षष्ठी	शुक्ल सप्तमी	शुक्ल अष्टमी	शुक्ल नवमी	शुक्ल दशमी	शुक्ल एकादशी	शुक्ल द्वादशी
15 अक्टूबर	16 अक्टूबर	17 अक्टूबर	18 अक्टूबर	19 अक्टूबर	20 अक्टूबर	21 अक्टूबर
पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती			विजय दिवस आश्विन शुक्ल दशमी 19 अक्टूबर	
शुक्ल त्रयोदशी	शुक्ल चतुर्दशी	शुक्ल पूर्णिमा				
22 अक्टूबर	23 अक्टूबर	24 अक्टूबर				

Rishi Dayanand - His Life And Work -Saroj Arya, Delhi

After a tour along the banks of the Ganges, lasting about a year, the Swami was again back at Kashi in March 1872, and stayed there for about a month. He then went to Monghyr and thence to Bhagalpore. Here a Bengali Christian gentleman hearing updesha (sermon) burst into tears and said,"Swamiji, had I found anyone like yourself a score of years earlier to remove my doubts, I would never have permitted myself to be separated from my faith and my kith and kins. In those days I went to many a pundit, but none could answer my questions to my satisfaction." It was here that the Maharaja of Burdwan paid him a visit, and begged him to stay in his palace, but the latter did not agree. After two month's stay at Bhagalpore, The Swami left for Calcutta in December 1872.

As soon as it was known that the great reformer was in Calcutta, educated people of all creeds flocked to him in large numbers. The Brahma Samaj there was wielding a powerful influence over the minds of the educated public on account of the work of Raja Ram Mohan Roy and Keshub Chandra Sen. The interest of the people in India's ancient culture had already been aroused and Swamiji discerned among those who came to him with a genuine keenness and a true spirit to know the truth. Swamiji was busy, the whole day, lecturing on religious topics and answering question from inquirers who were pouring in at all hours. To quote a Bengali paper of those days, "His power of lecturing, his skill in discussion, and his thorough acquaintance with the Shasatras astonished everyone. crowds of men would approach him with their doubts and quarries, and obtained satisfactory answers to their questions."

Mahashi Devendra Nath Tagore, Babu Keshub Chandra sen, Raja Surendra Nath Mohan Tagore, Pt.Mahesh Chandra Nyayaratna and Pt. Tara Nath Tarka Vachspati, were among the most remarkable his stay at Calcutta. The first meeting of Swamiji and Babu Keshub chandra Sen is not without interest The latter saw Swamiji and had a talk with him, without as much as disclosing his identity. After the conversation was over, he asked,

"by the way, have you seen Babu Keshub Chandra ?"

"Yes"

"But he was not here, all these days."

"I have seen him all the same."

"How could you, when he was not in Calcutta?"

"I have met him just now. You yourself are Babu Keshub.""How do you happen to recognize me ?"

No other person but Keshub could talk the way you have talked."

The two reformers met quite often and held long discussions. With all his differences, Babuji had come to have a genuine regard for Dayanand. At one of such meetings Babu Keshub remarked, "How sad that a Vedic scholar like yourself should be ignorant of English, otherwise what a suitable companion you would make me in my contemplated visit to England." Swamiji laughed and said, "Equally declarable is the fact that Babuji, master of a foreign language should be trying to resuscitate a culture of which he himself knew a little, and should talk to his people in a language of which they knew a little."

It was at Babu Keshub's suggestion that Swami Dayanand felt that he should discontinue lecturing in Sanskrit, and he was not sure that the interpreters interpreted him quite faithfully. He made up his mind that, henceforth his public lectures would be in Arya Bhasha (Hindi) as far as possible. He also took to wearing clothes at the instance of Pandit Ishwar Chandra Vidyasagar.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

मैं महावीर आर्य जो कि मैंने सत्र गुरुकुल, टटेसर किया है, मैं इस सत्र से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि इस सत्र में मुझे बहुत ही लाभ हुआ है और मैं भविष्य में संकल्प करता हूँ कि आज से मुझे अपनी मंजिल व लक्ष्य का पता चल गया है। आज से मेरा लक्ष्य आर्य और जय आर्यावर्त्त। मैं हिन्दू धर्म व मूर्ति पूजा में विश्वास करता करता था। आज से यह मेरा बहम दूर हो गया है। मेरी आत्मा व पूरा शरीर सन्तुष्ट हो गया है। मैं आर्य समाज को धन्यवाद देता हूँ। तन, मन, धन से पूरी तरह से सहयोग करुंगा।

नामः महावीर, आयुः 36 वर्ष, योग्यताः बारहवीं, पताः घड़ावठी, रोहतक, हरियाणा।

18/08/2018 को सुबह 8:15 पर मैं फिरोजपुर झिरका स्थल से पहुँचा तो मुझे मेरे प्रेरक वेदप्रकाश आर्य जी तथा 2-3 अन्य परिचित मिले जो आने पर बहुत खुश हुए, मुझे लगा कि मैं अपने परिवार में आ गया हूँ। यहाँ पर आचार्य जी के उपदेश सुनकर मैं बहुत प्रभावित हुआ उनके चेहरे का तेज, प्रेम व सहयोग और मार्गदर्शन मुझे अन्दर तक झकझोर गया। मेरे प्रेरक मित्र के साथ के कारण मेरा जीवन विषयों और दुव्यसनों से मुक्त रहा और आगे बचा जीवन वेदमत के अनुसार गुजारना चाहता हूँ और समाज सेवा करुंगा।

नामः सतेन्द्र कुमार, योग्यताः बी.ए., पताः ओम नगर, गुरुग्राम, हरियाणा।

यहाँ आकर ऐसा लगा कि यह एक जन-जागरण अभियान है। गुरुकुल की थोड़ी सी जगह और इतना महान् कार्य! सचमुच आश्चर्यजनक लगा। गुरुकुल काँगड़ी जैसी संस्था को यह कार्य करना चाहिए था। लेकिन वहाँ अब नकली काम ज्यादा हो रहे हैं। बिना पढ़े, पास कर दिये जाते हैं। विदेशी कम्पनियाँ और पूँजिपति गुलाम बनाये बैठे हैं देश को, लूटेरे, बेईमान, मिलावटखोरों की चाँदी है।

मैं वानप्रस्थी के रूप में आस-पास के गाँव में प्रचार-प्रसार, आर्थिक मदद, नौजवानों को यहाँ गुरुकुल टटेसर के प्रत्येक महिने में होने वाले कार्यक्रम में भेजने का भी कार्य करुंगा।

नामः महावीर सिंह, आयुः 62 वर्ष, योग्यताः एम. काम., पताः गाँव नीलवाल, दिल्ली।

श्रद्धेय आचार्य जी नमस्ते, विशेष अनुभव यह यहाँ आकर मुझे हुआ कि ऐसे सत्र पूरे देश में संचालित किये जाने चाहिए, आज से महसूस हुआ कि इस सत्रों की देश को महती आवश्यकता ही नहीं बल्कि हमें परम धर्म समझना चाहिए। जो बातें आज तक नहीं सुनी वो भी सुनने को मिली। इस से विशेष लाभ जो हुआ वो ये कि वार्षिक उत्सव की बजाय आर्य समाजों को सत्र ही संचालित करने चाहिएँ। आपका हृदय से धन्यवाद।

इस सत्र हेतु मेरा सहयोग यह है कि मुझे सत्र लगवाने का समय प्रदान करें, सत्र की पूरी व्यवस्था मेरे सहयोग से होगी। व्यवस्था की सारी जिम्मेदारी मेरी रहेगी।

नामः देवेन्द्र आर्य, आयुः 51 वर्ष, प्रधानः आर्यसमाज धारुहेड़ा, पताः धारुहेड़ा, रेवाडी, हरियाणा।

मैं जो थी इस सत्र के बारे में लिखुंगा वह प्रयाप्त नहीं है, यह कार्य अनुभव और कल्पनाओं से परे है, आर्य समाज को जानने के बाद पिछले 12 वर्ष में मैंने आर्य निर्माण का कोई भी ऐसा कार्य नहीं देखा, जिससे इस तरह से आर्य निर्माण होता है। इस के बाद जो आर्य बना वह एक सच्चा आर्य होगा। वो कभी भी अपने रास्ते से नहीं भटक सकता है, इस कार्य को में कोटि-कोटि नमन करता हूँ, जिससे यह नई किरण दिखाई देती है। अब फिर से आर्य निर्माण होगा, फिर से आर्यसमाजों में संख्या दिखेगी, नहीं तो आर्य मंदिर तो पुरानी खण्डरों में ही बदल चुके हैं, वेदों का फिर से प्रचार-प्रसार होगा दो-दिन के अन्दर ही पूरी तरह से सत्र किसी भी तरह के विचार धारा को रखने वाले व्यक्ति को पूरी तरह से बदल कर रख देती है और क्या लिखू शब्द कम हैं। मैं आपका हमेशा ही सहयोग करता रहूगाँ।

नामः मुकेश आर्य, आयुः 29 वर्ष, योग्यताः एम. ए., पताः सैक्टर-39, गुरुग्राम, हरियाणा।

बौद्धिक सिद्धान्त के अपनाने से ही पाखंडी बाबाओं की दुकान को लग सकता है ताला : आचार्या

युवाओं को सिखाने होंगे श्रेष्ठ सिद्धांत : आचार्य

यज्ञोपवीत ग्रहण कर युवाओं ने लिया राष्ट्र रक्षा का संकल्प

बौद्धिक सिद्धांत से पाखंडी बाबाओं की दुकानें होंगी बंद : आचार्या

धर्म विषय सत्र में धर्म की परिभाषा को बताया

समाज को तोड़ने वाली ताकतों को जवाब देने के लिए तैयार रहें: इंदिरा

युवाओं ने लिया राष्ट्र रक्षा का संकल्प

आर्य निर्माण- समाचार पत्रों की दृष्टि में

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।